e-ISSN:2582 - 7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 4, Issue 7, July 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 5.928

International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 7, July 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0407033|

भारत का आर्थिक इतिहास और नयी आर्थिक नीति १९९१

Dr. Kamal Singh

Assistant Professor, Dept. of Economics, Nehru Memorial Shiv Narayan Das P.G. College, Budaun, U.P., India

सार

भारत का आर्थिक विकास सिंधु घाटी सभ्यता से आरम्भ माना जाता है। सिंधु घाटी सभ्यता की अर्थव्यवस्था मुख्यतः व्यापार पर आधारित प्रतीत होती है जो यातायात में प्रगति के आधार पर समझी जा सकती है। लगभग 600 ई॰पू॰ महाजनपदों में विशेष रूप से चिह्नित सिक्कों को ढ़ालना आरम्भ कर दिया था। इस समय को गहन व्यापारिक गतिविधि एवं नगरीय विकास के रूप में चिह्नित किया जाता है। 300 ई॰पू॰ से मौर्य काल ने भारतीय उपमहाद्वीप का एकीकरण किया। राजनीतिक एकीकरण और सैन्य सुरक्षा ने कृषि उत्पादकता में वृद्धि के साथ, व्यापार एवं वाणिज्य से सामान्य आर्थिक प्रणाली को बढ़ाव मिल।अगले 1500 वर्षों में भारत में राष्ट्रकूट, होयसल और पश्चिमी गंग जैसे प्रतिष्ठित सभ्यताओं का विकास हुआ। इस अवधि के दौरान भारत को प्राचीन एवं 17वीं सदी तक के मध्ययुगीन विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में आंकलित किया जाता है। इसमें विश्व के की कुल सम्पति का एक तिहाई से एक चौथाई भाग मराठा साम्राज्य के पास था, इसमें यूरोपीय उपनिवेशवाद के दौरान तेजी से गिरावट आयी।आर्थिक इतिहासकार अंगस मैडीसन की पुस्तक द वर्ल्ड इकॉनमी: ए मिलेनियल पर्स्पेक्टिव (विश्व अर्थव्यवस्था: एक हज़ार वर्ष का परिप्रेक्ष्य) के अनुसार भारत विश्व का सबसे धनी देश था और 17वीं सदी तक दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यस्था था।[1][2]भारत में इसके स्वतंत्र इतिहास में केंद्रीय नियोजन का अनुसरण किया गया है जिसमें सार्वजनिक स्वामित्व, विनियमन, लाल फीताशाही और व्यापार अवरोध विस्तृत रूप से शामिल है।[3][4] 1991 के आर्थिक संकट के बाद केन्द्र सरकार ने आर्थिक उदारीकरण की नीति आरम्भ कर दी। भारत आर्थिक पूंजीवाद को बढ़ावा देने लग गया और विश्व की तेजी से बढ़ती आर्थिक अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनकर उभरा।[3][5] १९९० के दशक में भारत सरकार ने आर्थिक संकट से बाहर आने के क्रम में अपने पिछले आर्थिक नीतियों से विचलित और निजीकरण की दिशा में सीखने का फैसला किया और अपनी नई आर्थिक नीतियों को एक के बाद एक घोषित करना शुरू कर दिया।

परिचय

सिंधु घाटी सभ्यता विश्व का सबसे पहला ज्ञात स्थायी और मुख्य रूप से नगरीय आबादी का उदाहरण है। इसका विकास 3500 ई॰पू॰ से 1800 ई॰पू॰ तक हुआ जो उन्नत और संपन्न आर्थिक प्रणाली की ओर बढ़ा। यहाँ के नागरिकों ने कृषि, पालतू जानवार, तांबे, कांसा एवं टिन से तिक्ष्ण उपकरणों और शस्त्रों का निर्माण तथा अन्य नगरों के साथ इसका विक्रय करना आरम्भ किया।[6] घाटी के बड़े नगरों हड़प्पा, लोथल, मोहन जोदड़ो और राखीगढ़ी में सड़कें, अभिविन्यास, जल निकासी प्रणाली और जलापूर्ति के साक्ष्य, उनकी नगरीय नियोजन के ज्ञान को उद्घघाटित करता है। यद्यपि प्राचीन भारत में महत्त्वपूर्ण नगरीय जनसंख्या पायी जाती है लेकिन भारत की अधिकत्तर जनसंख्याँ गाँवों में निवास करती थी जिसकी अर्थव्यवस्था विस्तृत रूप से पृथक और आत्मनिर्भर रही है। [1,2] आबादी का मुख्य व्यवसाय कृषि था और कपड़ा, खाद्य प्रसंस्करण तथा शिल्प जैसे हाथ आधारित उद्योगों के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराने के अलावा खाद्य आवश्यकताएँ भी कृषि से पूर्ण होती थी। कृषकों के अलावा अन्य वर्गों के लोग नाई, बढ़ैइ, चिकित्सक (आयुर्वेद चिकित्सक अथवा वैद्य), सुनार, बुनकर आदि कार्य करते थे।[7] आर्थिक गतिविधियों को रूप देने में मुख्यतः हिन्दू धर्म और जैन धर्म प्रभावशाली भुमिका निभाते हैं।तीर्थस्थल कस्बे जैसे इलाहाबाद, बनारस, नासिक और पुरी जो मुख्यतः नदियों के तटों पर स्थित हैं तथा व्यापार एवं वाणिज्य के केन्द्र के रूप में विकसित हुये। धार्मिक उत्सव, त्योहार और तीर्थ यात्रा पर जाने की प्रथा ने तीर्थ अर्थव्यवस्था को उत्कर्ष पर पहुँचाया।[8]जैन धर्म में अर्थव्यवस्था को तीर्थकर महावीर और उनके सिद्धान्तों एवं दर्शन ने प्रभावित किया। इसके पीछे का इतिहास उनके दर्शन से समझाया जाता है। वो जैन धर्म के फैलाने वाले अन्तिम और 24वें तीर्थंकर थे। आर्थिक प्रसंग में उन्होंने 'अनेकांत (गैर-निरेपक्षतावाद) के सिद्धान्त से समझाया।[9] वस्त्र उद्योग में सूती, ऊनी और सिल्क प्रमुख थे। सूती वस्त्र उद्योग बड़ा व्यापक था। इस उद्योग में बहुत से लोग लगे हुए थे। कपास का धुनना और कातना आमतौर पर घरों में ही होता था, परन्तु किन्हीं क्षेत्रों में इस कार्य में विशिष्टता प्राप्त हो गई थी। बारीक से बारीक सूत काता जाता था। थेवेनॉट को अहमदाबाद के समीप कारीगरों का एक समूह मिला जिसका कोई निश्चित घर था और जो एक गाँव से

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 7, July 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0407033|

दूसरे गाँव को काम की तलाश में जाता था। यह बिनौलों से कपड़ा निकालने, रूई को साफ करने और धुनने का कार्य करते थे। भारत के ग्रामों मे ही नहीं, बड़े बड़े नगरों में जुलाहे परिवार रहते थे जो वस्त्रनिर्माण का कार्य करते थे। तैयार कपड़े को धोने का कार्य धोबी करते थे जो वस्त्र-निर्माण का कार्य करते थे। तैयार कपड़े को धोने का कार्य धोबी करते थे। तैयार कपड़े को धोने के लिए पहले गर्म पानी में औटाया जाता था। इसके पश्चात उसे धोया और धूप में सुखाया जाता था। मोटे कपड़े को धोते समय धोबी उसे पत्थर पर पीटते थे। बारीक कपड़ों को पीटा नहीं जाता था। उसे धूप में सुखाने के लिये फैला दिया जाता था। कपड़ा धोने के लिये विशेष प्रकार के पानी की आवश्यकता पड़ती थी। नर्मदा नदी का पानी कपड़े की धुलाई के लिये इस नदी के पानी में लाया जाता था।[3,4] नर्मदा नदी के तट पर बसा भड़ौंच नगर कपड़े की धुलाई के लिए प्रसिद्ध था। इस प्रकार ढाका के समीपवर्ती क्षेत्रों में बहुत से धोबी रहते थे, क्योंकि यहाँ का पानी कपड़े धोने के बड़ा उपर्युक्त था। कपड़े को नील से डाई किया जाता था। ऊनी वस्त्र उद्योग के केन्द्र कश्मीर, काबूल, आगरा, लाहौर और पटना थे। कश्मीर के शाल, कम्बल, पट्टू और पश्मीना प्रसिद्ध थे। फतेहपुर सीकरी में ऊनी दरियाँ बनती थी। ऊनी वस्त्रों का प्रयोग सामान्यत: धनी करता था। कीमत अधिक होने के कारण ऊनी वस्त्र का प्रयोग जन-साधारण की सामार्थ्य से बाहर था। जन-साधारण के लिये सस्ते और खुरदरे कम्बलों का निर्माण किया जाता था। इंगलिश ईस्ट इंडिया कम्पनी ने इंगलैड में बनी ऊनी कपड़े के लिये भारत में बाजार बनाने का प्रयत्न किया, परन्तु उसे इसमें अधिक सफलता नहीं मिली।

सिल्क उद्योग के लिए बनारस, अहमदाबाद और मुर्शिदाबाद प्रमुख थे। बंगाल से न केवल बड़ी मात्रा में सिल्क का निर्यात होता था, बल्कि सिल्क का कपड़ा भी बनता था। बनारस सिल्क की साड़ी और सिल्क पर जरी के कार्य के लिये प्रसिद्ध था। सूरत में सिल्क की दरियां बनती थी। सिल्क के कपड़े पर जरी का काम भी सुरत में होता था।[5,6]

देश-विदेश में भारतीय कपड़े की बड़ी माँग थी। भारतीय वस्त्र उद्योग संसार के विभिन्न भागों की कपड़े की माँग की पूर्ति करता था। यूरोपीय व्यापारियों के कारण भारतीय कपड़े के निर्यात को बड़ा बढ़ावा मिला। यूरोप भारतीय कपड़े की खपत का प्रमुख केन्द्र बन गया। कपड़े की माँग की पूर्ति स्थानीय बजाज करते थे। वे बड़े व्यापारियों से कपड़ा खरीदते थे। कपड़े को छोटे विक्रेता फेरी वाले थे जो न केवल नगर की गलियों में कपड़ा बेचते थे, बल्कि गाँव में भी कपड़े बेचते थे। गाँव में साप्ताहिक हाट या पेंठ लगती थी जहाँ बजाज कपड़ा बेचते थे। स्थिति को देखते हुए वे आम तौर पर नगद पैसा लेने की माँग नहीं करते थे। और खरीदार किसान फसल के समय उधार धन चुकाता था। कभी-कभी जुलाहे अपना कपड़ा लाकर बाजार में बेचते थे। कासिम बाजार के आस-पास रहने वाले जुलाहे अपना कपड़ा बेचने के लिए नगर के बाजार में लाते थे।

देश में आभूषण पहनने का आम रिवाज था। आजकल की तरह आभूषण पहनना सामाजिक प्रतिष्ठा का चिन्ह था। बादशाह, शाही परिवार एवं सामंत वर्ग रत्नजटिल आभूषणों का प्रयोग करता था। भारतीय नारी की आभूषण-प्रियता संसारप्रसिद्ध है। आभूषणों के निर्माण में निपुण कारीगर लगे हुए थे। आभूषण उद्योग देशव्यापी था। नारी के शरीर के विभिन्न अंगों के लिये अलग-अलग आभूषण थे। मुगलकाल में विभिन्न अंगों में पहनने के लिये निम्नलिखित आभूषणों का प्रचलन था-

सीसफूल सिर का आभूषण था। माथे के आभूषण था। माथे के आभूषण टीका या माँगटीका, झूमर और बिन्दी थे। माथे पर बिन्दी लगाने का आम रिवाज था और बिन्दी में मोती जड़े होते थे। आभूषण थे। गले के आभूषण हार, चन्द्रहार, माला मोहनमाला, माणिक्य माला, चम्पाकली, हँसली, दुलारी, तिलारी, चौसर, पँचलरा और सतलरा थे। दुलारी दो लड़ों, तिलारी तीन लड़ों, चौसर चार लड़ों, पँचलरा पाँच लड़ों और सतलरा सात लड़ों का आभूषण था। कमर का आभूषण तगड़ी या करधनी था। इसमें घुँघरू लगे होते थे जो चलते समय बजते थे। अँगूठी या मूँदरी अँगूली का आभूषण था जिसका बड़ा प्रचलन था। आरसी अँगूठे का आभूषण था, इसमें एक दर्पण लगा होता था। जिसमें मुँह देखा जा सकता था। पौंची, कंगन, कड़ा, चूड़ी और दस्तबन्द कलाई के आभूषण थे। भुजा के आभूँषण बाजूबन्द या भुजबन्द थे। बाजुबन्द का संस्कृत नाम भुजबन्द था। पैरों के आभूषण पाजेब, कड़ा थे। पैरों की अँगुलियों में बिछुए पहने जाते थे। पैरों के आभूषण आमतौर पर चाँदी के बने होते थे, जबकि दूसरे आभूषण सोने के बनते थे। गरीब लोग चाँदी के आभूषण पहनते थे।[7,8]

बहुमुल्य रत्नों का विदेशों से आयात भी होता था और दक्षिण भारत की खानों से भी हीरे निकाले जाते थे। टेवरनियर हीरों का एक प्रसिद्ध व्यापारी था। दक्षिण भारत में हीरों की एक खान का वर्णन करते हुए टेवरनियर लिखता है कि इसमें हजारों की संख्या में मजदूर काम करते थे। भूमि के एक बड़े प्लाट को खोदा जाता था। आदमी इसे खोदते थे, स्त्रियां और बच्चे उस मिट्टी को एक स्थान पर ले जाते थे। जो चारों ओर दीवारों से घिरा होता था। मिट्टी के घड़ों में पानी लाकर उस मिट्टी को धोया जाता था। ऊपरी मिट्टी दीवार में छेदों के द्वारा बहा दी जाती थी और रेत बच रहता था। इस प्रकार जो तत्त्व बचता था, उसे लकड़ी डण्डों से पीटा जाता था और अंत से हाथ से हीरे चुन लिये जाते थे।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 7, July 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0407033|

मजदूरों को बहुत कम मजदूरी मिलती थी। टेवरनियर के अनुसार मजदूरी ३ पेगोडा वार्षिक थी। हीरे चोरी न हो जायें, इसके लिए ५० मजदूरों पर निगरानी रखने के लिए १२ से १५ तक चौकीदार होते थे। टेवरनियर एक घटना का वर्णन करता है जबकि एक मजदूर ने एक हीरे को अपनी आँखों के पलक के नीचे छुपा लिया था। लकड़ी का काम

जहाज, नावें, रथ और बैलगाड़ियाँ इत्यादि बनाने में लकड़ी का प्रयोग होता था। सूरत में पारसी लोग नावें और जहाज बनाने के कार्य में लगे हुए थे। मैसूर में सन्दल की लकड़ी पर सुन्दर कारीगरी का कार्य होता था। भवन-निर्माण में भी लकड़ी का प्रयोग होता था। माल ढोने में बैलगाड़ियों का प्रयोग होता था, इस कारण बड़ी संख्या में इनका निर्माण होता था। पालकी बनाने में भी लकड़ी का प्रयोग होता था। धनवान व्यक्ति और स्त्रियां पालकी में सवारी करते थे। नदियों में नावों द्वारा माल ले जाया जाता था। इससे प्रतीत होता है कि नावों का बड़ी संख्या में निर्माण होता था। फिंच ने आगरा से बंगाल तक १८० नावों के बेड़े के साथ यात्रा की थी। ये नावें छोटी और बड़ी दोनों प्रकार की थी। गंगा पर ४०० से ५०० टन क्षमता वाले नावें चलती थीं। सूरत, गोवा, बेसीन, ढाका, चटगाँव, मसुलीपट्टम, आगरा, लाहौर और इलाहाबाद इत्यादि में नावें और जहाज बनाये जाते थे। [9,10] काश्मीर लकड़ी की सुन्दर डिजायनदार चीजें बनाने के लिए प्रसिद्ध था।

भवन निर्माण में ईंट, पत्थर, चूना, लकड़ी और मिट्टी का प्रयोग होता था। `आइने-अकबरी' में भवन निर्माण में काम आने वाली विभिन्न वस्तुओं के मूल्य दिये हुए है। आईन के अनुसार ईटें तीन प्रकार की होती थी--पकी हुई, अधपकी और कच्ची। इनका मूल्य क्रमश: ३० दाम, २४ दाम और १० दाम प्रति हजार था। लाल पत्थर का मूल्य ३ दाम प्रति मन था। कुशल कारीगर पत्थर को तराशनने का कार्य करते थे। साधारण जनता के मकान मिट्टी के बने होते थे और उन पर छप्पर पड़ा होता था। मिट्टी की बनी इन छोटी कोठरियों में परिवार के सब सदस्य रहते थे। इतना ही नहीं, उनके पशु गाय, बछड़ा भी उसी में रहते थे। परन्तु धनवान व्यक्ति शानदार मकानों में रहते थे। आगरा, दिल्ली और प्रान्तीय राजधानियों में अनेक विशाल भवन बनाये गये जिनका निर्माण कुशल कारीगरों ने किया और जिसके फलस्वरूप अनेक राजों, मजदूरों, पत्थरतराशों, बढ़ई एवं अन्य कारीगरों को रोजगार मिला।

मुगल शासक महान भवन-निर्माता थे। बाबर ने बहुत-सी इमारतें बनवायें, किन्तु उनमें से केवल दो, पानीपत का काबूल बाग और संभल की जामा मस्जिद आज भी मौजूद है। बाबर के शब्दों में - "मेरे आगरा, सीकरी, बयाना, धौलपुर, ग्वालियर तथा कोल के भवनों के निर्माण में १४९१ पत्थर काटने वाले रोजाना कार्य करते थे।"[11,12]

हुमायूँ का जीवन संघर्षमय रहा, फिर भी उसने पंजाब के हिसार जिले में फतेहाबाद में एक सुन्दर मस्जिद बनवायी। शेरशाह के भवनों में उसका सहसराम का मकबरा और पुराने किले में बनी `किलाए कुहना मस्जिद' प्रसिद्ध हैं। इनमें जामा मस्जिद और बुलन्द दरवाजा बड़े प्रसिद्ध हैं। अन्य भवन `बीरबल का महल' सुनहला मकान या शाहजादी अम्बर का महल, तुर्की सुल्ताना का महल और दीवाने खास हैं। सिकन्दरा में अकबर का मकबरा भवन-निर्माण कला का अच्छा उदाहरण है। अकबर ने आगरा और लाहौर में किलों का निर्माण कराया। आगरा के किले में प्रमुख भवन दीवाने आम, दीवाने खास और जहाँगीरी महल है। जहाँगीर की रूची भवन-निर्माण की अपेक्षा चित्रकला की ओर अधिक थी, परन्तु उसकी कमी की पूर्ति उसकी प्रिय बेगम नूरजहाँ ने की। नूरजहाँ ने अपने पिता की स्मृति में `इत्तमाद्-उद्दौला' का मकबरा बनवाया। यह संगमरमर का बना है और देखने में बड़ा सुन्दर है। नूरजहाँ ने लाहौर के समीप शाहदरे में जहाँगीर का मकबरा बनवाया।

मुगल बादशाहों में शाहजहाँ सबसे महान भवन-निर्माता था। उसके प्रसिद्ध भवन दिल्ली का लाल किला, जामा मस्जिद और ताजमहल हैं। लाल किले में दीवाने खास सबसे अधिक सुन्दर और अलंकृत है। यहाँ एक खुदे लेख में इसकी सुन्दरता का वर्णन इन शब्दों में किया गया है--

गर फिरदौस बर रूये जमीं अस्त।
हमीं अस्तों हमीं अस्तों, हमीं अस्त॥

यानी, यदि पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो वह यही है, यही है और यही है। शाहजहाँ ने ताजमहल अपनी प्रिय बेगम अर्जमन्द बानू की स्मृति में बनवाया। ताजमहल को बनाने और इसका नक्शा तैयार करने के लिये देश-विदेश के कारीगरों को बुलाया गया। ताजमहल के कई नक्शे प्रस्तुत किये गये और बादशाह ने अंत में एक नक्शे पर अपनी स्वीकृति प्रदान की। पहले ताजमहल का छोटा-सा मॉडल लकड़ी का बनाया गया। जिसे देखकर कारीगरों ने ताज का निर्माण किया। ताजमहल उस्ताद ईसा की देखरेख में तैयार किया गया जिसे १००० रु मासिक वेतन मिलता था। इसके निर्माण पर ५० लाख रु। खर्च हुआ। औरंगजेब ने लाल किले में अपने प्रयोग के लिये मोती मस्जिद बनवायी और लाहौर में बादशाही मस्जिद का निर्माण कराया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल निर्माण कला का ह्रास हो गया।[13]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 7, July 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0407033|

विचार-विमर्श

आज़ादी के बाद भारत के तत्कलीन प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने निर्गुट आन्दोलन (नॉन-अलाइंड मूव्मेंट) को भारत की प्रमुख विदेश नीति बनाया। इस दौरान भारत ने सोवियत रूस से दोस्ती बढयी। सोवियत रूस मे समाजवाद था। यूँ तो भारत ने समाजवाद को पूरी तरह से नही अपनाया पर भारत की आर्थिक नीति में समाज वाद के लक्षण साफ देखे जा सक्ते थे। भारत में ज्यादातर उद्योगों को सरकारी नियंत्रण के अंतर्गत रखे जाने के लिए कई तरह के नियम बनाए गए। इस तरह कि नीति को कई अर्थशास्त्रियों ने लाइसेंस राज और इंस्पेक्टर राज का नाम दिया। बिजली, सड़कें, पानी, टेलीफोन, रेल यातायात, हवाई यातायात, होटल, इन सभी पर सरकारी नियंत्रण था। या तो निजी क्षेत्र को इन उद्योगों में पूंजी निवेश की अनुमती नहीं थी या फिर बहुत ही नियंत्रित अनुमती थी। दूसरे कई उद्योगों में (जैसे खिलौने बनाना, रीटेल, वगैरह) बड़ी निजी कम्पनियों को पूंजी निवेश की अनुमती नहीं थी। बैंकों को भी सरकारी नियंत्रण में रखा जाता था।

1951 से 1979 तक भारतीय आर्थिक विकास दर 3.1 प्रतिशत थी। पर कैपिटा विकास दर 1.0 % थी। विश्व में इसे 'हिन्दू ग्रोथ रेट' के नाम से जाना जाता था। भारतीय उद्योगों का विकास दर 5.4 प्रतिशत था। कृषि विकास दर 3.0 प्रतिशत था। कई कारणों से भारत की आर्थिक विकास बहुत कम था। मुख्य कारण थे-

- कृषि उद्योग मे संस्थागत कमियाँ
- देश में कम तकनीकी विकास
- भारत की अर्थव्यवस्था का विश्व के दूसरे विकासशील देशों से एकीकृत (इंटिग्रेटेड) न होना
- चीन और पाकिस्तान से हुए चार युद्ध
- बंग्लादेशी शरणार्थियों की देश में बाढ़
- 1965, 1966, 1971 और 1972 पड़े हुए चार सूखे
- देश के वित्तीय संस्थानो का पिछड़ा हुआ होना
- विदेशी पूंजी निवेश पर सरकारी रोक
- शेयर बाज़ार में अनेक बड़े और छोटे घपले
- कम साक्षरता दर
- कम पढ़ी-लिखी भारी जनसंख्या

नरसिंह राव के नेतृत्व वाली भारतीय सरकार ने भारत मे बडे पैमाने मे आर्थिक सुधार करने का फैसला किया। उदारीकरण कह्लाने वाले इन सुधारो के आर्किटेक्ट थे मनमोहन सिंह। मन्मोहन सिन्ह ने आने वाले समय मे भारत की अर्न्नीति को पूरी तरह से बदल्ने की शुरुआत की। उंके किये हुए आर्थिक सुधार मेंली तीन क्श्रेणियो मे आते है[11]

- उदारीकरण (लिब्रलाइज़ेशन)
- वैश्वीकरण (ग्लोबलाइज़ेशन)
- निजीकरण (प्राइवेटाइज़ेशन)

- 1996 से 1998 तक पी चिदम्बरम भारत के वित्त मंत्री हुए और उन्होने मनमोहन सिंह की नीतियो को आगे बढाया।
- 1998 से 2004 तक देश मे भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने और भी ज़्यादा उदारीकरण और निजीकरण किया।
- इसके बाद 2004 मे आधुनिक भारत की अर्न्नीति के रचयिता मनमोहन सिंह भारत के प्रधानमंत्री बने और पी चिदम्बरम वित्त मंत्री।
- 2014 में भाजपा सरकार ने भी इसी दिशा में अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाया। २०१४ के आँकड़ों के अनुसार क्रयशक्ति समानता के आधार पर भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका था। १ जुलाई २०१७ से जीएसटी लागू होने से संपूर्ण भारत एकसमान बाजार में परिवर्तित हो गया।

इन सभी सालो मे भारत ने कफी तेज़ तरक्की की। अर्थ्व्यवस्था मे आमूल-चूल परिवर्तन हुए और भारत ने विश्व अर्थ्व्यवस्था मे अपना स्थान बनाना शुरू किया।[12]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 7, July 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0407033|

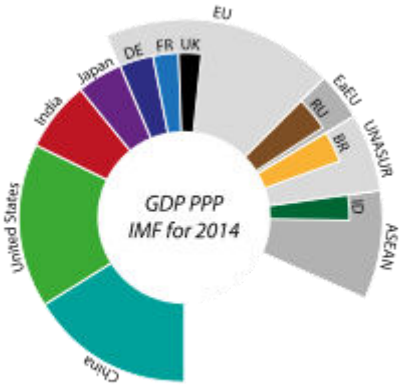

GDP PPP 2014 Selection EN

आने वाले दशकों में विश्व की अर्थव्यवस्था में भारी परिवर्तन होने के संकेत हैं। विश्व अर्थव्यवस्था में भारत का हिस्सा वर्तमान 5% से बढ़कर सन् 2040 में 20.8% हो जाने का अनुमान है।

मैथ्यू जोसेफ (कनिष्ट सलाहकार, ICRIER) द्वारा 2014 से 2040 तक विश्वअर्थव्यवस्था का अनुमान

	2011	2014	2020	2030	2040
जर्मनी	4.2	3.8	3.4	2.8	2.3
यूएसए	20.4	19.2	17.6	15.3	13.9
जापान	6.2	5.6	4.7	3.7	2.9
चीन	11.3	16.3	22.2	30.9	37.4
भारत	4.9	6.3	8.5	14.3	20.8

परिणाम

ब्रितानी राज के समय भारत में अनेक भारतीय ने अर्थव्यवस्था और अर्थनीति पर अपनी लेखनी चलाई। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के आरम्भिक उदारपन्थी नेताओं को इस बात का श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने उन्नीसवीं सदी के अपने समकालीन अन्य आन्दोलनों के मुकाबले सबसे पहले औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के आर्थिक पहलुओं का विश्लेषण किया। संभवतः राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में इन्हीं नेताओं का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान था, क्योंकि राष्ट्रवादी आन्दोलन की नींव रखने में इस आर्थिक समीक्षा और उससे जुड़े दूसरे मुद्दों को बड़े पैमाने पर प्रचारित किया गया। भाषणों, परचों, अखबारों, नाटकों, गीतों और प्रभात-फेरियों के माध्यम से भारतवासियों तक यह बात पहुँचाई गई कि ब्रिटिश राज एक सुविचारित योजना के तहत भारत को लूटने की प्रक्रिया में संलग्न है।[13]

- दादाभाई नौरोजी
- रमेशचन्द्र दत्त
- महादेव गोविन्द रानाडे
- गणेश व्यंकटेश जोशी
- गोपाल कृष्ण गोखले
- पृथ्वीश चन्द्र राय (The Poverty Problem in India)
- जे.सी. कुमारप्पा

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 7, July 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0407033|

१९९० के दशक में भारत सरकार ने आर्थिक संकट से बाहर आने के क्रम में अपने पिछले आर्थिक नीतियों से विचलित और निजीकरण की दिशा में सीखने का फैसला किया और अपनी नई आर्थिक नीतियों को एक के बाद एक घोषित करना शुरू कर दिया। आगे चलकर इन नीतियों के अच्छे परिणाम देखने को मिले और भारत के आर्थिक इतिहास में ये नीतियाँ मील के पत्थर सिद्ध हुईं। उस समय पी वी नरसिंह राव भारत के प्रधानमंत्री थे और मनमोहन सिंह वित्तमंत्री थे।

इससे पहले देश एक गंभीर आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा था और इसी संकट ने भारत के नीति निर्माताओं को नयी आर्थिक नीति को लागू के लिए मजबूर कर दिया था । संकट से उत्पन्न हुई स्थिति ने सरकार को मूल्य स्थिरीकरण और संरचनात्मक सुधार लाने के उद्देश्य से नीतियों का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया। स्थिरीकरण की नीतियों का उद्देश्य कमजोरियों को ठीक करना था, जिससे राजकोषीय घाटा और विपरीत भुगतान संतुलन को ठीक किया सके।[10]

वित्त मंत्री डॉ मनमोहन सिंह द्वारा नई आर्थिक नीति आरम्भ करने के पीछे मुख्य उद्देश्य थे, वे निम्नलिखित हैं[11]-

- (१) भारतीय अर्थव्यवस्था को 'वैश्वीकरण' के मैदान में उतारने के साथ-साथ इसे बाजार के रूख के अनुरूप बनाना।
- (२) मुद्रास्फीति की दर को नीचे लाना और भुगतान असंतुलन को दूर करना।
- (३) आर्थिक विकास दर को बढ़ाना और विदेशी मुद्रा के पर्याप्त भंडार का निर्माण करना ।
- (४) आर्थिक स्थिरीकरण को प्राप्त करने के साथ-साथ सभी प्रकार के अनावश्यक आर्थिक प्रतिबंधों को हटाना। अर्थव्यवस्था के लिए बाजार अनुरूप एक आर्थिक परिवर्तिन लाना।
- (५) प्रतिबंधों को हटाकर, माल, सेवाओं, पूंजी, मानव संसाधन और प्रौद्योगिकी के अन्तरराष्ट्रीय प्रवाह की अनुमति प्रदान करना।
- (६) अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में निजी कंपनियों की भागीदारी बढ़ाना। इसी कारण सरकार के लिए आरक्षित क्षेत्रों की संख्या घटाकर 3 कर दिया गया।[9]

नयी आर्थिक नीति १९९१ की विशेषताएं

- केवल छह उद्योगों लाइसेंस योजना के तहत रखा गया था।
- निजी क्षेत्र के लिए प्रवेश। सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका केवल चार उद्योगों तक ही सीमित था ; बाकी सभी उद्योगों को भी निजी क्षेत्र के लिए खोल दिए गए थे।
- विनिवेश। विनिवेश कई सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में बाहर किया गया था।
- विदेश नीति के उदारीकरण। विदेशी इक्विटी की सीमा कई गतिविधियों में 100 % करने के लिए उठाया गया था , यानी, एनआरआई और विदेशी निवेशकों को भारतीय कंपनियों में निवेश करने की अनुमति दी गई।
- तकनीकी क्षेत्र में उदारीकरण। स्वत: अनुमति विदेशी कंपनियों के साथ प्रौद्योगिकी समझौतों पर हस्ताक्षर करने के लिए भारतीय कंपनियों को दिया गया था।
- विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड (एफआईपीबी) की स्थापना करना। इस बोर्ड को बढ़ावा देने और भारत में विदेशी निवेश लाने के लिए स्थापित किया गया था।
- लघु उद्योग की स्थापना करना। विभिन्न लाभों लघु उद्योगों को देने की पेशकश कर रहे थे।

उदारीकरण 1991 भारतीय कंपनियों में निम्नलिखित तरीके से उदारीकरण से पहले उद्योगों पर डाल दिया गया है, जो लाइसेंस , कोटा और कई और अधिक प्रतिबंध और नियंत्रण का अंत करने के लिए संदर्भित करता है[2]

- कुछ को छोड़कर लाइसेंस का उन्मूलन।
- व्यावसायिक गतिविधियों के विस्तार या संकुचन पर कोई प्रतिबंध नहीं है।
- कीमतें तय करने में स्वतंत्रता।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 7, July 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0407033|

- आयात और निर्यात में उदारीकरण।
- माल और सेवाओं के आंदोलन में स्वतंत्रता
- माल और सेवा की कीमतें तय करने में स्वतंत्रता

निजीकरण निजी क्षेत्र को बड़ी भूमिका देने और सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका को कम करने के लिए संदर्भित करता है। निजीकरण सरकार की नीति पर अमल करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए :

- सार्वजनिक क्षेत्र , यानी, निजी क्षेत्र के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम के हस्तांतरण का विनिवेश
- औद्योगिक और वित्तीय पुनर्निर्माण (बीआईएफआर) के बोर्ड की स्थापना करना। इस बोर्ड नुकसान पीड़ित सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में बीमार इकाइयों को पुनर्जीवित करने के लिए स्थापित किया गया था।
- सरकार की हिस्सेदारी के कमजोर पड़ने। विनिवेश के लिए निजी क्षेत्र की प्रक्रिया में 51% से अधिक शेयरों का अधिग्रहण तो यह निजी क्षेत्र के लिए स्वामित्व और प्रबंधन के हस्तांतरण में यह परिणाम है।[11]

वैश्वीकरण

यह दुनिया के विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं के एकीकरण के लिए संदर्भित करता है। 1991 तक भारत सरकार ने आयात और आदि का आयात टैरिफ , प्रतिबंध के लाइसेंस के लिए, लेकिन नई नीति सरकार निम्नलिखित उपायों के द्वारा वैश्वीकरण की नीति अपनाई के बाद इस संबंध में विदेशी निवेश के संबंध में सख्त नीति का पालन किया गया था:

- आयात उदारीकरण। सरकार पूंजीगत वस्तुओं के आयात से कई प्रतिबंध हटा दिया।
- विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम (फेरा) विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम के द्वारा बदल दिया गया था (फेमा)
- टैरिफ संरचना का युक्तिकरण
- निर्यात शुल्क के उन्मूलन।
- आयात शुल्क में कमी।

वैश्वीकरण का एक परिणाम के रूप में भौतिक सीमाओं और राजनीतिक सीमाओं व्यापार उद्यम के लिए कोई अवरोध बने रहे। सारी दुनिया एक वैश्विक गांव बन जाता है। वैश्वीकरण वैश्विक अर्थव्यवस्था के विभिन्न राष्ट्रों के बीच अधिक से अधिक संपर्क और अन्योन्याश्रय शामिल[12]

निष्कर्ष

कारोबारी माहौल के कारकों और बलों व्यापार पर प्रभाव के लिए बहुत कुछ है। आम प्रभाव और व्यापार और उद्योग में इस तरह के बदलाव के प्रभाव को नीचे की व्याख्या कर रहे हैं:

- बढ़ती प्रतिस्पर्धा:

नई नीति के बाद भारतीय कंपनियों के आंतरिक बाजार से प्रतिस्पर्धा और बहुराष्ट्रीय कंपनियों से प्रतिस्पर्धा का मतलब है जो सभी दौर प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा। नवीनतम प्रौद्योगिकी को अपनाने और जो कर सकता है जो कंपनियों को ही जीवित है और प्रतिस्पर्धा का सामना कर सकता है संसाधनों का बड़ी संख्या में कर रहे थे। कई कंपनियों ने प्रतिस्पर्धा का सामना करना है और बाजार में छोड़ना पड़ा नहीं कर सका। उदाहरण के लिए, में एक नेता के वेस्टन कंपनी थी जो टीवी बाजार में अधिक से अधिक 38% हिस्सेदारी के साथ वी बाजार क्योंकि बहुराष्ट्रीय कंपनियों से सभी दौर प्रतिस्पर्धा के बाजार में भी अपना नियंत्रण खो दिया है। १९९५-९६ तक कंपनी लगभग टीवी बाजार में अज्ञात बन गया।

- अधिक ग्राहकों की मांग:

नई आर्थिक नीति से पहले बहुत कुछ उद्योगों या उत्पादन इकाइयों थे। एक परिणाम के रूप में उत्पाद की कमी हर क्षेत्र में वहां गया था। क्योंकि बाजार निर्माता-उन्मुख किया गया था इस कमी की है, यानी, उत्पादकों बाजार में प्रमुख व्यक्तियों बन गया। लेकिन

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 7, July 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0407033|

नई आर्थिक नीति के बाद कई और अधिक व्यवसायियों उत्पादन लाइन में शामिल हो गए और विभिन्न विदेशी कंपनियों को भी भारत में अपनी उत्पादन इकाइयों की स्थापना की। नतीजतन हर क्षेत्र में उत्पादों की अधिशेष था। अधिशेष के लिए कमी से यह बदलाव खरीदार बाजार के लिए बाजार में एक और पारी, यानी, निर्माता बाजार में लाया। बाजार ग्राहक उन्मुख हो गया और कई नई योजनाएं ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए कंपनियों द्वारा किए गए थे। आजकल उत्पादों के मन में / निर्मित रखते हुए ग्राहक की मांग के उत्पादन कर रहे हैं।

- तेजी से तकनीकी वातावरण बदलने:

इससे पहले या पूर्व नई आर्थिक नीति के लिए केवल एक छोटा सा आंतरिक प्रतिस्पर्धा नहीं थी। लेकिन नई आर्थिक नीति के बाद विश्व स्तर की प्रतियोगिता शुरू कर दिया और कंपनियों को विश्व स्तर की प्रौद्योगिकी को अपनाने की जरूरत है इस वैश्विक प्रतिस्पर्धा खड़ा करने के लिए। अपनाने के लिए और विश्व स्तरीय प्रौद्योगिकी अनुसंधान एवं विकास विभाग में निवेश को लागू करने के लिए बढ़ाने के लिए हैं। कई दवा कंपनियों के 12% से 2% से अनुसंधान और विकास विभाग में अपने निवेश में वृद्धि हुई है और कंपनियों के कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए एक बड़ी राशि खर्च करना शुरू कर दिया।

- परिवर्तन के लिए आवश्यकता:

१९९१ व्यावसायिक उद्यमों से पहले समय की एक लंबी अवधि के लिए स्थिर नीतियों का पालन कर सकता है, लेकिन 1991 के बाद व्यावसायिक उद्यमों समय-समय पर उनकी नीतियों और संचालन को संशोधित किया है।

- मानव संसाधन के विकास के लिए की जरूरत है:

१९९१ भारतीय उद्यमों अपर्याप्त प्रशिक्षित कर्मियों के द्वारा प्रबंधित कर रहे थे पहले। नए बाजार की स्थितियों में उच्च क्षमता कौशल और प्रशिक्षण के साथ लोगों की आवश्यकता होती है। इसलिए भारतीय कंपनियां अपने मानव कौशल विकसित करने की आवश्यकता महसूस की।

- बाजार उन्मुखीकरण:

इससे पहले फर्मों के बाद पहले, यानी, अवधारणा उपज बेचने और उसके बाद बाजार के लिए जाना है, लेकिन अब कंपनियों, बाजार अनुसंधान के आधार पर उत्पादन की योजना बना, यानी, विपणन अवधारणा का अनुसरण की जरूरत है और ग्राहक के लिए चाहते थे।

- सार्वजनिक क्षेत्र के लिए बजटीय समर्थन की कमी:

1991 के पहले सार्वजनिक क्षेत्र के सभी घाटा बजट से विशेष कोष को मंजूरी देने से सरकार की ओर से अच्छा किए जाने के लिए इस्तेमाल किया गया। लेकिन सार्वजनिक क्षेत्रों जीवित है और अपने संसाधनों का उपयोग करके विकसित करने के लिए हैं आज कुशलतापूर्वक अन्यथा इन उद्यमों में विनिवेश का सामना करना पड़ेगा। कुल मिलाकर उदारीकरण, वैश्वीकरण और निजीकरण की नीतियों को भारतीय व्यापार और उद्योग पर सकारात्मक प्रभाव डालता है लाया है। वे और अधिक ग्राहक ध्यान केंद्रित हो गया है और ग्राहकों की संतुष्टि को महत्व देना शुरू कर दिया है।

- अस्तित्व की बात में निर्यात करें:

भारतीय व्यापारी वैश्विक प्रतिस्पर्धा और विदेशी व्यापार बहुत उदार बनाया नई व्यापार नीति का सामना करना पड़ रहा था। एक परिणाम के रूप में अधिक विदेशी मुद्रा में कई भारतीय कंपनियों के निर्यात कारोबार में शामिल हो गए और उस में सफलता का बहुत कुछ मिला है कमाने के लिए। कई कंपनियों ने निर्यात प्रभाग शुरू करने से दोगुने से उनके कारोबार में अधिक वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए, रिलायंस कंपनी, वीडियोकॉन, एमआरएफ, सिएट टायर, आदि के निर्यात बाजार में एक बड़ी पकड़ लिया।[13]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 7, July 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0407033|

संदर्भ

1. "The World Economy (GDP) : Historical Statistics by Professor Angus Maddison" [विश्व अर्थव्यवस्था (जीडीबी): प्रोफेसर अंगस मैडीसन द्वारा ऐतिहासिक आँकड़े] (PDF) (अंग्रेज़ी में). वर्ल्ड इकॉनमी. मूल (PDF) से 22 जुलाई 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 अप्रैल 2015.
2. ↑ मैडीसन, अंगस (2006). The World Economy - Volume 1: A Millennial Perspective and Volume 2: Historical Statistics (अंग्रेज़ी में). आर्थिक सहयोग तथा विकास संगठन द्वारा ओईसीडी प्रकाशन. पृ° 656. आई°ऍस°बी°ऍन° 9789264022621. मूल से 15 अक्तूबर 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 अप्रैल 2015.
3. ↑ "Economic survey of India 2007: Policy Brief" [भारत का आर्थिक सर्वेक्षण २००७: संक्षिप्त नीति] (PDF) (अंग्रेज़ी में). ओईसीडी. मूल से 8 दिसंबर 2015 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 9 अप्रैल 2015.
4. ↑ "Industry passing through phase of transition" [उद्योग संक्रमण के दौर से गुजर रहा है] (अंग्रेज़ी में). द ट्रिब्यून. मूल से 6 जुलाई 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 अप्रैल 2015.
5. ↑ रणजीत वी° पंडित (2005). "Why believe in India" [भारत में क्यों विश्वास] (अंग्रेज़ी में). मैकिन्से. मूल से 6 जुलाई 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 अप्रैल 2015.
6. ↑ मार्शल, जॉन (1996). Mohenjo-Daro and the Indus Civilization: Being an Official Account of Archaeological Excavations at Mohenjo-Daro Carried Out by the Government of India Between the Years 1922 and 1927 [मोहन जोदड़ो और सिंधु सभ्यता: भारत सरकर द्वारा १९२२ और १९२७ के मध्य मोहन जोदड़ो की पुरातत्व खुदाई में आधिकारिक खाता होना पाया गया।] (अंग्रेज़ी में). पृ° 481. आई°ऍस°बी°ऍन° 9788120611795.
7. ↑ चोपड़ा, प्राण नाथ (2003). A Comprehensive History Of Ancient India (3 Vol. Set) [प्राचीन भारत का व्यापक इतिहास] (अंग्रेज़ी में). स्टर्लिंग. पृ° 73. आई°ऍस°बी°ऍन° 9788120725034.
8. ↑ आर्य, समरेन्द्र नारायण (2004). History of Pilgrimage in Ancient India: Ad 300-1200 [प्राचीन भारत में तीर्थयात्रा का इतिहास: ३०० ई° से १२०० ° तक] (अंग्रेज़ी में). मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड. पृ° 3,74.
9. ↑ Anekant: Views And Issues [अनेकान्त: विचार और मुद्दे] (पहला संस्करण). लाडनूं, भारत: जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं, भारत. 2001. पृ° 46. मूल से 16 अप्रैल 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 अप्रैल 2015. `|firstlast=` missing `|lastlast=` in first (मदद)
10. ↑ Calculated from turner and others, eds., Earth Transformed, Table 4.32
11. ↑ "संग्रहीत प्रति" (PDF). मूल (PDF) से 18 अप्रैल 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 अप्रैल 2015.
12. "RBI Monetary Policy $1 trillion forex reserves: A pipe dream". मूल से 2 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 नवंबर 2018.
13. ↑ "Energy News Monitor". XIII (48). ORF. 15 May 2017. मूल से 2 मई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 May 2018.

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 5.928

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

9710 583 466 | 9710 583 466 | ijmrset@gmail.com

www.ijmrset.com